

आज शाम प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी भोपाल में मध्यप्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी भारत-भवन योजना का विधिवत् उद्घाटन करेंगी। इस तरह देश के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय शुरू होगा।

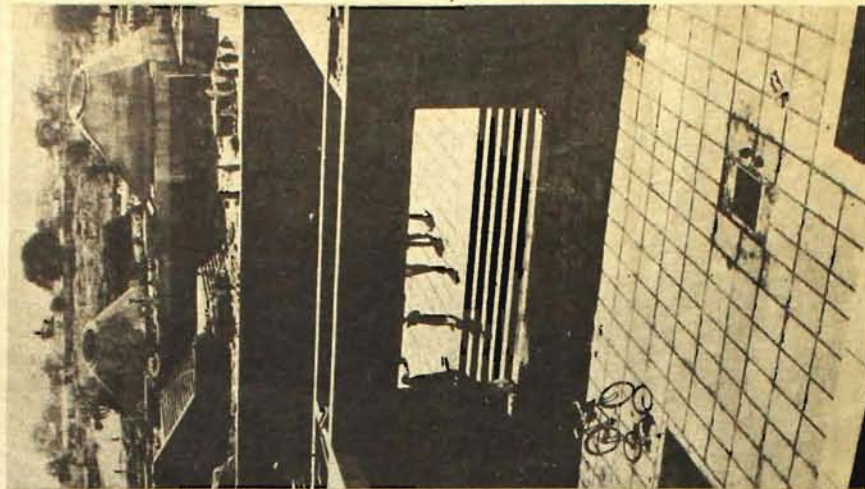
संदिग्धिया

परिशिष्ट

१३ फरवरी १९८२

भारत भवन में प्रमुख रूप से एक नव-पूर्णकालीन राममंदी, भारतीय कविता का एक पुस्तकालय और शास्त्रीय और लोक संगीत का एक संग्रहालय होगा। इसके अतिरिक्त योजना यह भी है कि अतिरिक्त कलाकार के लिए एक आवास हो। जिसमें वह घर में देश या प्रेक्षक से कम से कम एक शीर्ष स्थानीय साहित्यकार, एक कलाकार, एक संगीतकार और एक रसिकों आकर कुछ दिनों के लिए यहाँ रहेगा। वह चाहे तो बर्खास्त आदि आयोजित कर सकता है। बुधवार अपनी साधना जारी रख सकता है। उसके यहाँ होने का लाभ उठाते हुए भारत भवन उस पर एक पूरा परिवर्तित दस्तावेज तैयार कर सकेंगे और धीरे-धीरे इसका भी एक सख्त विकसित होता जाएगा। प्रेक्षक की युवा प्रतिभा का किसी श्रेष्ठ सृजनात्मकता से घनिष्ठ और आत्मीय संबंध बन सके, उसके लिए भी यह एक अवसर होगा।

साहित्य और कलाओं में समकालीनता की अभी तक की अवधारणाएँ प्रचलित रही हैं, उन पर पुनर्विचार जरूरी होगा। गहराई से रहने वाले व्यक्ति समकालीन हैं, लेकिन गाँव या अंगल में रहने वाले नहीं, यह धारणा पिछले दिनों विना जाँचे-पढ़े मान ली गई। वस्तुस्थिति इससे काफी अलग है।

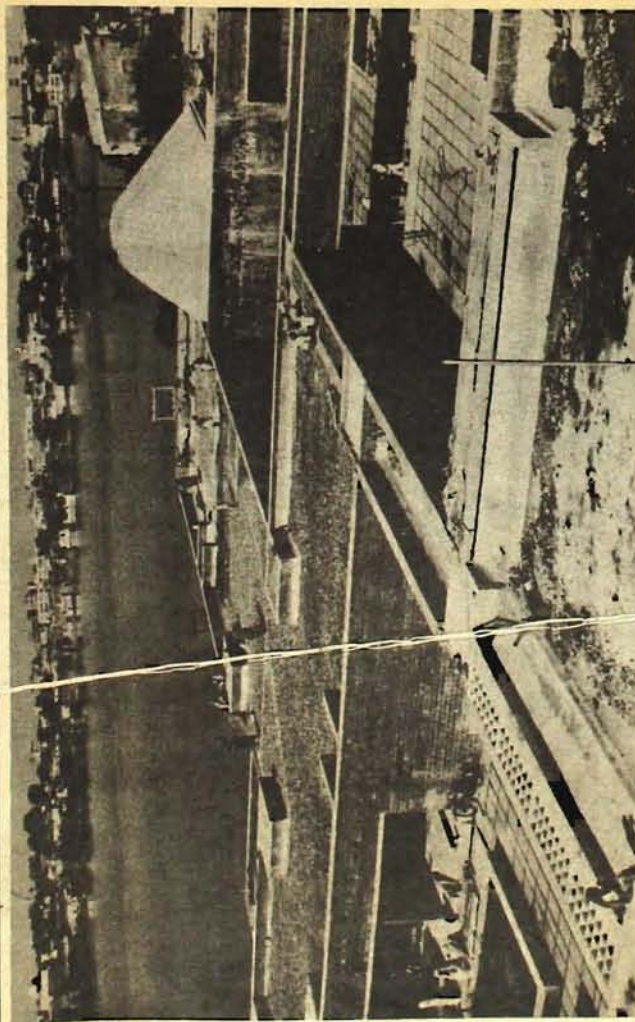


कला, साहित्य, संगीत, नाटक सब साथ

अशोक राजपूत

भारत भवन ललित और प्रदर्शनकारी कलाओं और साहित्य का समागम है: यहाँ वे एक-दूसरे के पास-पड़ोस में हैं, परस्पर प्रतिकृत होते हुए। यह स्थान समकालीन अभिव्यक्ति, अन्वेषण, विचार और नवाचार के लिए है। यह उनके लिए रचनात्मक और प्रेरक परिवेश है जो ललित कला, रंगमंच, कविता और संगीत के आज के परिदृश्य में कुछ नया और सार्थक, साहसिक और स्वतन्त्र, उत्तेजक और अन्तर्दृष्टिपूर्ण करना चाहते हैं। देश में, फिर चाहे नगरों में, ग्रामों में या वनों में जो उत्कृष्ट और स्थायी महत्व का रचा जा रहा है, उसका कुछ हिस्सा यहाँ संग्रहीत है। जो उससे प्रतिकृत होने को तैयार हैं, भारत भवन उन तक समकालीन कलाकारों की महिमा, संघर्ष और पीड़ा, गहराइयों और सपने पहुँचा सकने की आशा करता है। यह नयी सृजनात्मकता, परम्परा और क्लासिक्स की खोज और एक नए सांस्कृतिक उन्मेष में व्यापक हिस्सेदारी का केंद्र है।

यह तो ठीक है कि बीसवीं सदी में रहने अन्ततः धीरे-धीरे आयोग्य के समाप्त होने पर फिर प्रभाव हो जाती है। भारत भवन इसे अधिक स्थायी रूप देने का प्रयत्न है। यह ऐसा केंद्र होगा, जहाँ नव-साहित्य, संगीत, कविता, रंगमंच और संगीत एक-दूसरे के निकट रहेंगे। संगीत एकत्र होगा। जो तो देश में अनेक केंद्र हैं, पर प्रायः वह अपने-अपने ढंग का पहना होगा। जहाँ इतनी कलाएँ और साहित्य एक साथ हों। बुद्धि एक दूसरे के पड़ोस में हों। समीक्षा यह उन्मेष करने चाहिए कि उनके बीच अनेक नए सम्बन्ध, अनेक समकालीनता के साहित्य और कलाओं का वैसाविक पूर्ववर्ष आदि के माध्यम से विचार-विनिमय और आन्तरिक होने की प्रक्रियाओं पर समकालीन युवन का पूरा दृष्टिकोण साक्षात् हो और कलाकारों और रसिकों दोनों ही वनों के घोंघे देर के लिए ही नहीं एक-दूसरे के निकट आने का अवसर बन सकें, इसकी चेष्टा होती नहीं है। मध्यप्रदेश कला परिषद् ऐसी नव्या के सृजनात्मक ढाँचे में ही इस तरह प्रदर्शनकारी और सार्वजनिक का साहित्य अन्तर्निहित और अन्वेषणात्मक है। किसी एक आयोजन में एक कार्यक्रमों की विना चाहे किसी

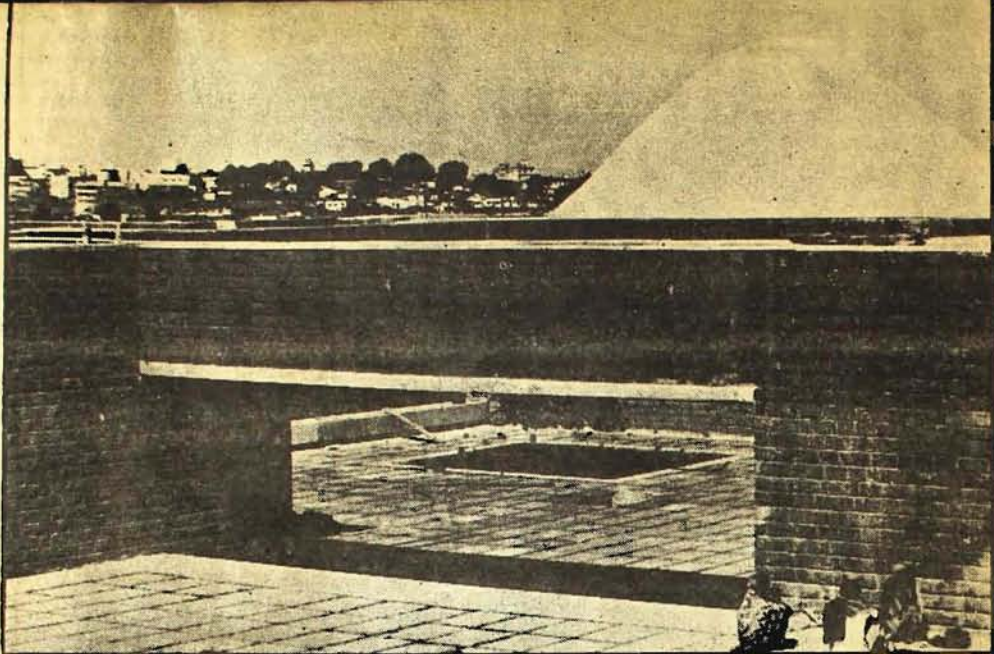


का यत्न करती है। अन्ततः सभी रचना के संस्करण हैं—युवन की अनेक वृष्टियों परिलक्षित। बावजूद इसके, अक्सर ऐसा होता रहा है कि एक-दूसरे से प्रतिकृत होने या पड़ोस में होने का अवसर बहुत कम मिलता रहा है। कम से कम आधुनिकता के इन दौर में। प्राचीनों में इस तरह के सम्बन्ध की याद अधिक इच्छा थी और एक बड़ी समृद्ध परम्परा थी। औपनिवेशिक मानसिक्ता और अंधकारने मध्यवी के विकास में उस स्तर पर उत्तार दिया, जहाँ एक बहुत सख्त और अन्तर्निष्ठता का माहौल रचा जा चुका था। हमारी विद्वत् की सलाई में कोई साधक सम्बन्ध बचा ही नहीं। नतीजा यह है कि कविता को समकालीन से कुछ मतलब नहीं, चित्रकार नहीं आते कि युव में क्या हो रहा है, नाँक कभी कविता नहीं पढ़ते और समीक्षक नर नहीं जानते कि रंगमंच में इन दिनों क्या हो रहा है। हमारी अपनी परम्परा के विरुद्ध और स्वयं परिपक्व में आये निम्न ने जो समावेशी रूप लिया, उससे अनुरोध, एक तिगा वातावरण बन गया है, जिसे कलाओं की मार्मिक निरक्षरता का परिचय करो जो भवता है। जैसा अधुना कलाओं में आस में है, वैसा जो आतिथेय रसिकों और महोदयों में हो गया है। मदक रसिक अलग है।

मध्यप्रदेश में पिछले कुछ वर्षों में इस अनुपस्थिति और निरक्षरता के विरुद्ध एक अभियान चल रहा है। विविध रूपों के अनेक कार्यक्रमों के लिए

भारत भवन के शब्दार्थ

इका-संलित कला संग्रहालय
दीर्घा-व्यपक की कलावीथिका
अकार-संगीत का कलागंगा
मध्यप्रदेश रंगमंच-एक रिपर्टरी
अन्तर्गत-एक बार रंगमंच
बहिरंग-एक सृष्टि रंगमंच
नेत्र्य-को रंग बर
अन्तर्गत-रिपर्टरी के लिए एक कला
भारत-भारतीय कला पुस्तकालय
आय-संगीत
आय-अतिरिक्त कलाकारों के लिए
आवास



भारत भवन

मध्यप्रदेश में कलाओं के लिए एक नया घर

उद्घाटन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी 13 फरवरी, 1982

रूपकार : ललित कला संग्रहालय

मध्यप्रदेश रंगमंडल : एक नयी रिपर्टरी

वागर्थ : भारतीय कविता पुस्तकालय

अनहद : शास्त्रीय लोक संगीत संग्रहालय

पहले नौ दिन :

समकालीन भारतीय कला, मध्यप्रदेश की आदिवासी और लोक कला की दो बड़ी प्रदर्शियाँ, के. जी. सुब्रमण्यन् जयदेव बघेल की प्रदर्शियाँ

बंगला, असमिया, मणिपुरी और उड़िया के कवियों द्वारा काव्यपाठ

रंगमंडल द्वारा पांच नये नाटक और लोक नाट्य शैलियों में प्रदर्शन, श्री पीटर ब्रुक द्वारा अभिनेताओं की वर्कशॉप

तीन बुजुर्ग संगीतकारों की सभा

मध्यप्रदेश के संगीत, नृत्य और साहित्य पर नौ पुस्तकों, मध्यप्रदेश के चार चित्रकारों की रंगीन प्रतिकृतियों का प्रकाशन

मध्यप्रदेश शासन का उपक्रम



मध्यप्रदेश में कलाओं का एक नया घर

रूपकार कलाओं, रंगकर्म, कविता, शास्त्रीय और लोक संगीत और आदिवासी लोक कलाओं से संबद्ध राष्ट्रीय महत्व की अनेक प्रवर्तक संस्थाओं को एक स्थान पर लाने की दृष्टि से मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भारत-भवन का निर्माण किया गया है। भारत-भवन न केवल मध्यप्रदेश में बल्कि पूरे देश में एक अद्वितीय सांस्कृतिक परिसर होगा।

भोपाल के बड़े तालाब के किनारे की ऊंची चट्टानों पर स्थित होने से कम ऊँचाई का यह भवन दूर से गुफाओं की सी उपस्थिति का आभास देता है। भारत-भवन का निर्माण औपचारिक रूप से वर्ष १९७४ में प्रारंभ हुआ किन्तु वास्तविक कार्य तो पिछले दो वर्षों में ही संपन्न हुआ। इसके निर्माण पर लगभग १२०.०० लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है। भवन का डिजाइन देश के प्रख्यात वस्तुविद बम्बई के श्री चार्ल्सकोरिया ने किया है।

इस भवन में स्थायी संग्रहालय कलादीर्घा, कलाकार आवास, कविता पुस्तकालय, संगीत संग्रहालय, एक बंद रंग शाला, एक खुली रंगशाला, दो नेपथ्य कक्ष, एक अभ्यास कक्ष, एक रंग कर्मशाला, एक ललित कला कर्मशाला, प्रशासन कक्ष के अलावा भंडार, फव्वारे, अनलॉडिंग प्लेटफार्म और विशाल खुले प्रवेश स्थल भी बनाये गये हैं। भवन का प्लिथ एरिया ९,३०० वर्ग मीटर है।

प्रवेश स्थल पर दोनों ओर भवन की छतों पर मनोरम बगीचे होंगे जहाँ बच्चों को घूमने और बैठने की सुविधा रहेगी। भवन की बाग़िकला में रंग प्रणाली की छत बैफल स्लेब विशिष्ट है। इस प्रकार की छतों का निर्माण ऊंची इंजीनियरिंग कुशलता से ही संभव है। शैल का निर्माण बहुत चुपकर कार्य है। इसी प्रकार बैफल स्लेब से बड़े बड़े कक्ष बनाये गये हैं। रंगशाला में प्री-स्ट्रेश्ड प्रणाली की बीम डाली गई है जिसमें विशेष प्रकार की हाई ट्रेन्साइट इस्पात का प्रयोग किया गया है। भवन की दीवारें पत्थर की हैं जिनकी चूनाई अत्यंत कुशलतापूर्वक विशेष कारीगरों द्वारा की गई है। बड़े बड़े कक्षों में कुछ रोशन-दानों के माध्यम से रोशनी और हवा का सुनिश्चित किया गया है। छतों पर बगीचे होने से विशेष प्रकार का वाटर प्रूफिंग ट्रीटमेंट किया गया है।

बिजली की पूति के लिए ५०० के. व्ही. ए. का एक सब स्टेशन बनाया गया है जिससे निरंतर बिजली मिलती रहे। भवन में बिजली की फिटिंग इस प्रकार की गई है कि आवश्यकता के अनुसार कहीं भी बिजली की लाइन का उपयोग किसी भी स्थान या प्रदर्श विषय पर रोशनी केन्द्रित करने के लिए किया जा सकता है। दीवारों पर कलाकृतियों के प्रदर्शन के लिए विशेष प्रकार के टेफस और फिटिंग लगाये गये हैं। दोनों रंगशालाओं में आवाज और रोशनी के लिए आधुनिक उपकरण की व्यवस्था की जा रही है।

इस भवन के निर्माण में २ लाख ५० हजार घनफीट चट्टानों को काटना पड़ा, एक लाख ५० हजार सीमेंट की बैलियाँ और ५१० टन इस्पात प्रयोग में लाया गया। छत में ५०१० बैफल लगाये गये। पत्थरों की गड्ढाई और चूनाई में विशेष रूप से २० कुशल कारीगरों ने ३ वर्षों तक अनवरत कार्य किया लगभग २०० मजदूर भी इसी अवधि में निरंतर कार्यरत रहे।

योजना के अनुसार भारत-भवन में नीचे दिये गये पाग होंगे:-

(क) रूपकर-यह ललित कलाओं का संग्रहालय होगा। इसमें पूरे देश भर से न केवल आधुनिक कला बल्कि आदिवासी और लोक कला की कृतियाँ भी सम्मिलित की जायेंगी। श्री जे. स्वामीनाथन इसके निर्देशक हैं और एक सलाहकार मंडल इसकी गतिविधियों के संचालन के लिए बनाया गया है। श्री मकबूल फिदा हुसैन, श्री रामकुमार, श्री अकबर पदमश्री, श्री कृष्ण खन्ना, श्री गुलाम मोहम्मद खोख, श्री प्रणव रंजन रे इसमें शामिल हैं। कला के विचारधाराओं और विषयों द्वारा मध्यप्रदेश के २० जिलों से आदिवासी और लोक कला कृतियों के संग्रह का एक बृहद आयोजन इस बीच सफलतापूर्वक किया गया था। देश के अनेक शीर्षस्थ कलाकारों ने अपनी कला-

कृतियाँ रियायती मूल्य पर संग्रहालय को प्रदान की हैं। इनमें से अनेक महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ लम्बे समय तक के लिए प्रदान की गयी हैं।

(ख) वागर्थ-यह १४ भारतीय भाषाओं की कविता का पुस्तकालय होगा। कविता पुस्तकों के अलावा इसमें देश भर के कवियों के विन्न दस्तावेज, कविताओं के पोस्टर्स और रिकार्ड्स भी इसमें शामिल किये जायेंगे। अनेक शीर्षस्थ कवियों और आलोचकों का एक सलाहकार मंडल बनाया गया है। डा. यू. आर. अन्नयमूर्ति (कन्नड़), डा. केदारनाथ सिंह (हिन्दी), श्री अली सरदार जाफरी (उर्दू), डा. हिरन मोहोई (असमिया), डा. अय्यपा पानिकर (मलयालम), श्री जी. एम. जेब (गुजराती), डा. अतरसिंह (पंजाबी), श्री सुभाष मुखोपाध्याय (बंगाली), श्री सीतलकरात महापात्र (उड़िया), श्री दिलीप चित्रे (मराठी) आदि इसके सदस्य हैं।

(ग) अनहद-शास्त्रीय और लोक संगीत संग्रहालय। इसमें देश भर के महत्वपूर्ण शास्त्रीय और लोक संगीतज्ञों से संबंधित सामग्री के अलावा रिकार्ड्स और टेपस का संग्रह होगा। मध्यप्रदेश कला परिषद् के पास शास्त्रीय और लोक संगीत की रिकार्डिंग का जो महत्वपूर्ण संग्रह है, वह इसमें शामिल किया जावेगा।

(घ) अंतरंग और बहिरंग-रंगमंच मध्यप्रदेश रंग मंडल के निदेशक श्री व. व. कारंत हैं। एक प्रशागृह (अंतरंग) और एक खुला रंगमंच (बहिरंग) इसमें शामिल हैं। इसमें भारतीय रंगमंच से संबद्ध एक संग्रहालय भी होगा। दो नेपथ्य शालाओं के साथ-साथ एक बड़ा रिहर्सलरूम और एक कर्मशाला भी इससे संबंधित होंगी।

(ङ) ललित-यह ललित कलाओं का पुस्तकालय और अभिलेखागार होगा। इसमें पुस्तकों और प्रकाशनों के अलावा ललित कलाओं से संबद्ध पत्राचार और दस्तावेज और अन्य सामग्री भी संग्रहित की जायेगी।

(च) आकार-इसमें याफिक्स मूर्तिशिल्प, चित्रकला और मूर्तिशिल्प से संबद्ध एक कर्मशाला होगी। मध्यप्रदेश के कलाकार और विद्यार्थियों को यहाँ प्रशिक्षित किया जावेगा।

(छ) आश्रम-यह कलाकार का सृजन आवास होगा। योजना यह है कि प्रत्येक वर्ष एक शीर्षस्थ संगीतज्ञ, एक रंगकर्मी को एक फिल्म निर्माता और एक कलाकार को यहाँ एक या दो महीने के लिए निमंत्रित किया जायेगा। उसके बारे में यहाँ सारी सामग्री एकत्र की जायेगी और उसे अपनी इच्छानुसार सृजनकर्म करने के लिए सुविधाएं प्रदान की जायेंगी।

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी १३ फरवरी, १९८२ की संस्था को भारत-भवन का उद्घाटन करेगी। भवन के शुभारम्भ के अवसर पर कलाओं और कविताओं का एक सप्ताह पर्यंत उत्सव का आयोजन किया गया है। "रूपकर" एक विशाल प्रदर्शनी का आयोजन करेगा और एक महत्वपूर्ण केंद्रलाग का प्रकाशन भी किया जायेगा। पूर्वी अंचल अर्थात् बंगाली, असमिया, उड़िया और मणिपुरी के चुने हुए कवियों का काव्यपाठ होगा, जिसमें मूल काव्यपाठ के साथ ही साथ हिन्दी अनुवाद भी प्रस्तुत किया जायेगा। अनेक शीर्षस्थ शास्त्रीय संगीतकारों का एक रात्रि पर्यंत अधिवेशन होगा। कालिदास सम्मान १९८१-८२ भी इस अवसर पर प्रदान किया जायेगा। प्रसंगवश इस वर्ष का कालिदास सम्मान रूपकर कलाओं के लिए दिया गया है। रंग मंडल इस अवसर पर हिन्दी उर्दू संस्कृत और पोलिश भाषाओं में लिखे गये मूल नाटकों की प्रस्तुतियों की शृंखला शुरू करेगा। वागर्थ १४ भारतीय भाषाओं की एक-एक कविता का मूल और उसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए पोस्ट कार्ड जारी करेगा और कविता पोस्टरों की एक शृंखला शुरू की जाएगी। मध्यप्रदेश कला परिषद् के आलोचना दैमासिक पूर्वग्रह का आधुनिक भारतीय कला पर केन्द्रित एक विशेषांक भी इस अवसर पर प्रकाशित होगा।